**Indian J. Soc.& Pol. 04(02):2017:111-114** **ISSN 2348-0084(P)**
**ISSN 2455-2127(O)**

# 'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' में प्रेम और सहानुभूति के तत्व

**संजय शर्मा[1] अजय सिंह[2]**
[1]शोधार्थी राजनीति विज्ञान,पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0 भारत
[2]एसोसियेट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, हण्डिया पी जी कालेज हण्डिया, इलाहाबाद,उ0प्र0 भारत

**ABSTRACT**

***जॉन स्टुअर्ट मिल एक प्रतिभाशाली एवं प्रभावशाली राजनीतिक विचारक थे जिन्हें उदारवादी, अनिच्छुक जनतन्त्रवादी बहुलवादी, सहकारी समाजवादी, कुलीनवादी और नारीवादी चितंक के तौर पर जाना जाता है। मिल के विचारों पर पिता जेम्स मिल, वेंथम, ह्यूम, वर्कले, हार्टले रिकार्डों और काम्टे का प्रभाव है। काम्टे के प्रत्यक्षवादी दर्शन से सहमत होते हुए भी काम्टे के स्त्रियों की सामाजिक–घरेलू दासता के जैविक समाजशास्त्रीय आधार पर औचित्यता प्रदान करने के विरोध में मिल ने स्त्रियों को पुरुषों के समान सामाजिक–राजनीतिक अधिकार देने की वकालत की। इस तर्क आधारित विचारों की परिणति ''द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' के रूप में हुई हेरियट टेलर और जॉन स्टुअर्ट मिल तपेदिक से पीड़ित हुए तो वे इलाज हेतु फ्रांस गए, उस समय वे इस पुस्तक पर काम कर रहें थे। उसी समय हेरियट टेलर की मृत्यु 1858 ई0 में हो गई। बाद में मिल और उनकी पुत्री हेलन ने इसे पूरा किया। इस पुस्तक के बारे में कहा जा सकता है–''। Joint Producation of Husband wife of Daughter".***

***KEY WORDS: मिल, द सब्जेक्शन आफ वुमेन, हेरियेट टेलर, हेलन***

'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' 1869 जॉन स्टुअर्ट मिल (1806–1873) एवं उनकी पत्नी हेरियट टेलर मिल (1807–1858) लिखित एक निबंध है। जॉन स्टुअर्ट मिल एक प्रतिभाशाली एवं प्रभावशाली राजनीतिक विचारक थे जिन्हें उदारवादी, अनिच्छुक जनतन्त्रवादी बहुलवादी, सहकारी समाजवादी, कुलीनवादी और नारीवादी चितंक के तौर पर जाना जाता है। मिल के विचारों पर पिता जेम्स मिल, वेंथम, ह्यूम, वर्कले, हार्टले रिकार्डों और काम्टे का प्रभाव है। काम्टे के प्रत्यक्षवादी दर्शन से सहमत होते हुए भी काम्टे के स्त्रियों की सामाजिक–घरेलू दासता के जैविक समाजशास्त्रीय आधार पर औचित्यता प्रदान करने के विरोध में मिल ने स्त्रियों को पुरुषों के समान सामाजिक–राजनीतिक अधिकार देने की वकालत की। इस तर्क आधारित विचारों की परिणति ''द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' के रूप में हुई हेरियट टेलर और जॉन स्टुअर्ट मिल तपेदिक से पीड़ित हुए तो वे इलाज हेतु फ्रांस गए, उस समय वे इस पुस्तक पर काम कर रहें थे। उसी समय हेरियट टेलर की मृत्यु 1858 ई0 में हो गई। बाद में मिल और उनकी पुत्री हेलन ने इसे पूरा किया। इस पुस्तक के बारे में कहा जा सकता है–''।

यह निबंध उस समय के यूरोपीय समाज के पारंपरिक मापदंडों के खिलाफ 'लिंग समानता' के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करता है। मिल लिंग समानता को मानव जाति के नैतिक और बौद्धिक उन्नति के लिए आवश्यक मानते है। इस निबंध में तार्किक तरीके से पितृसत्तात्मकता, महिलाओं की अधीनता, सामाजिक और कानूनी असमानता का विरोध किया गया है। 'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' में मिल महिलाओं के मताधिकार और राजनीतिक भागीदारी की बात करते हुए उन्हें आत्मनिर्भर और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता प्रदान करने की बात करते हैं। 'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' चार अध्यायों में विभाजित है– प्रथम अध्याय में 'स्त्री अधीनता' को एक सार्वभौमिक परम्परा के रूप में देखते हुए 'व्यक्तिगत स्वतन्त्रता' में विस्तार देने की बात कही गई है। द्वितीय अध्याय में 'कानूनी परतन्त्रता' पर विचार करते हुए लिंग समानता के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में प्रेम और सहानुभूति को पति–पत्नी के लिए अपरिहार्य बताया गया है। तृतीय अध्याय में 'नारी मुक्ति' की बात करते हुए इसे 'स्त्री–पुरुष' दोनों की लड़ाई माना है। चतुर्थ अध्याय में नारी मुक्ति में ही समाज का भविष्य सुरक्षित है, बताया है। इस अध्याय में मिल स्त्री पुरुष संबंधों में सुधार की बात करते हैं।

संसार रचना विधान में स्त्री–पुरुष दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। किसी अकेले ने जगत को विस्तार नहीं दिया। एक की दूसरे को जरुरत, प्रेम और सहानुभूति माध्यम बने। प्रेम और सहानुभूति की मानव जीवन में जरुरत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इसका अभाव खालीपन, अलगाव और अवसाद की ओर ले जाता है। नकारात्मक सोच, उदासी कभी–कभी मृत्यु का कारण बन जाती है। 'द सब्जेक्शन ऑफ

*1:Corresponding Author*

वूमेन' में पति–पत्नी के बीच सच्चे और पवित्र रिश्ते, आदर्श विवाह, परिवार, मानवता और समानता आधारित संबंधों पर विचार किया गया है। इस निबंध में प्रेम और सहानुभूति के तत्व मौजूद है। शोधपत्र का आधार लिखित प्रमाण अथवा प्रलेख होगें। दार्शनिक एवं वैज्ञानिक पद्धति प्रयोग में लाते हुए शोधपत्र में द्वितीयक स्रोत प्रयुक्त होगें।

रंजना जायसवाल (जनसत्ता, 5 फरवरी 2017) अपने लेख 'प्रेम का जनतन्त्र' में कहती है– ''प्रेम में जनतन्त्र की तरह 'स्त्री–पुरुष' का समान अधिकार होना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं है। जब तक स्त्री का जनतन्त्र नहीं होगा, प्रेम का जनतन्त्र विकसित नहीं हो सकता। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। विभेद मिटने के साथ किसी विमर्श की आवश्यकता नहीं रह जाएगी। शुभ्रा परमार (2015) 'नारीवादी सिद्धान्त और व्यवहार' में कहती है– पति–पत्नी के बीच सौहार्दपूर्ण व्यवहार संतुलन और तालमेल पैदा करता है। अनामिका (2015) 'स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा' में परिवार को स्त्री–पुरुष का हित–निकाय मानती है। मिल को एक रोमांटिक चिंतक मानते हुए कहती है– ''उनके विचारों में मध्यम कोटि की रुमानी कविता की गंध आती हैं।

प्रोफेसर जगदीश्वर चतुर्वेदी अपने शोध पत्र 'जॉन स्टुअर्ट मिल' और उनका लेखन (2010) में खुद मिल के जीवन को प्रेम और सहानुभूति से ओत–प्रोत मानते है जैसा कि इस उद्धरण से प्रतीत होता है ''पुस्तक 'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' के बारे में मिल कहते हैं– आज के बाद कभी भी कोई मेरे काम के बारे में विचार करे तो उसे यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि यह एक व्यक्ति की बुद्धि चेतना की देन नहीं है बल्कि तीन की है। इसमें किसकी कितनी भूमिका है और कितना मौलिक है और किसका नाम लेखक के रूप में छप रहा है, यह ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है।'' केट मिलेट (1970) 'सेक्सुअल पोलिटिक्स' में मिल के विचारों को पितृसत्ता की हिमाकत करने वाला मानती है। सीमोन दि बुआँ (1949) 'द सेकंड सेक्स' में हल्की आलोचना के साथ मिल के विचारों को महत्व देती हैं। मेरी बोलस्टोनक्राफ्ट (1792) 'ए विंडीकेशन ऑफ द राइट ऑफ वूमेन' ने नारी–पुरुष जीवन में प्रेम और सहानुभूति के तत्व को अपरिहार्य बताया है।

इन पुस्तकों और शोधपत्रों में लेखक, लेखिकाओं ने मिल के लेखन पर विचार किया है और कुछ ने प्रेम सहानुभूति का तत्व जीवन के लिए जरुरी है, बताया है। रंजना जायसवाल प्रेम में जनतन्त्र की माँग करती है। शुभ्रा परमार स्त्री–पुरुष जीवन में सौहार्दपूर्ण व्यवहार चाहती है। अनामिका मिल को रोमांटिक कहती है जिनके विचारों में रुमानी गंध आती है जो महत्व मिल के विचारों को देना चाहिए, प्रदान नहीं करती हैं। प्रोफेसर जगदीश्वर चतुर्वेदी के लेखन से यह बात उभरकर आती है कि खुद मिल, हेरियट टेलर एवं उनकी पुत्री का जीवनभर एक दूसरे के साथ परस्पर प्रेम रहा। मेरी बोलस्टोनक्राफ्ट ने मानव जीवन के लिए प्रेम और सहानुभूति अपरिहार्य माना है।

मिल का मानना है यदि अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में परिवार जैसा कि प्रायः कहा जाता है, सहानुभूति, कोमलता और स्वतन्त्रता के प्रेमपूर्ण विस्मरण का केन्द्र है, वहीं मुखिया के संदर्भ में कहा जाता है कि वह हठधर्मिता, दबंगेपन और एक दुहरा आदर्शवादी मुलम्मा चढ़े स्वार्थ का केन्द्र होता है।(सक्सेना,2013पृ068) वे मानते है कि परिवार में पत्नी के साथ जो पुरुष विनम्रतापूर्वक व्यवहार करते है, उनकी छवि बेहतर होने के बजाय बदतर हो जाती है।(वही पृ070) मिल का आशय है कि समाज उन्हें ताने देता है, पत्नी का गुलाम तक कहता हैं। 'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' में मिल कहते हैं– 'समाज में समर्पण की नैतिकता रह चुकी है, अब न्याय की नैतिकता स्थापित करने की जरुरत है।' अब हम समाज की ऐसी व्यवस्था में प्रवेश कर रहे है, जिसमें न्याय एक बार फिर मुख्य गुण होगा और जो समान और सहानुभूतिपूर्ण संबंधों पर आधारित होगा।(वही,पृ075) पहले समर्पण स्त्रियोचित गुण माना जाता रहा और शौर्य पुरुषोचित। मिल एक का दूसरे के प्रति समर्पण चाहते है समानता के स्तर पर। मिल समानता के लिए सहानुभूति और प्रेम को एक आवश्यक तत्व के रूप में देखते हैं। उनका कहना है– बराबरी के लिए सहानुभूति की आवश्यकता है। जरुरत इस बात की है कि समानता में सहानुभूति की पाठशाला बने, प्रेमपूर्ण माहौल में रहने की सीख दे, जिसमें एक तरफ सत्ता और दूसरी तरफ उसका अनुपालन न हों।(वही पृ076) इन विचारों से एक बात परिलक्षित होती है कि दोनों एक दूसरे के गुणों को आत्मसात करें। संबंधों को एक दूसरे पर थोपे नहीं। वे समानता पर आधारित विवाह को आदर्श विवाह मानते है लेकिन प्रेम, सहानुभूति के लिए विवाह को अनिवार्य नहीं मानते।

मिल नारी जीवन में व्याप्त असमानता के पहलू पर विचार करते हुए कानूनों में व्यापक सुधार के हिमायती है। वे स्पष्ट रूप से कहते हैं अब हम कानूनी रूप से परतन्त्र नहीं रहे, घर की महिलाओं को बचाइए।(राष्ट्रीय सहारा, हस्तक्षेप, 28 जून 2014) कानून, प्रेम और सहानुभूति के आपसी संबंधों की बात मिल ने 'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' में कहीं है। वे कहते है– ''मैं बिल्कुल स्वीकार करता हूँ (और यही मेरी आशाओं की आधार शिला है) कि मौजूदा कानून के तहत भी अनेक विवाहित लोग (इंग्लैड के उच्च वर्गों में संभवतः बहुत सारे लोग) समानता के न्यायोचित कानून की भावना में रहते हैं। अगर ऐसे अनेक लोग न होते, जिनकी नैतिक भावनाएं मौजूदा कानून से बेहतर होती तो कानूनों में कभी कोई सुधार नहीं आया होता, ऐसे लोगों को उन सिद्धान्तों का समर्थन करना चाहिए, जिनकी वकालत यहाँ की गई है, जिनका एक मात्र ध्येय है– अन्य विवाहित जोड़ों का जीवन भी उनके जैसा ही बनना।(सक्सेना 2013पृ077)

मिल कहते हैं– 'आधुनिक समय में जीवन के मुख्य आधार निसंदेह न्याय एवं विवेक है, प्रत्येक में दूसरे के अधिकारों के प्रति सम्मान और हरेक में दूसरे की परवाह व देखभाल करने की क्षमता।(वही पृ0116) उनका मानना है यदि विवाहित दम्पत्ति सुसंस्कृत और अच्छे संस्कार वाले लोग हैं, तो वे एक दूसरे की रुचियों के प्रति सहनशील होते हैं लेकिन क्या विवाह में ही लोग परस्पर सहनशीलता की ही उम्मीद करते है ? मिल आगे कहते है– प्रवृत्तियों और रुचियों का यह अंतर यदि प्रेम या कर्त्तव्य द्वारा नियंत्रित न किया जाय तो यह लगभग हर घरेलू मुद्दे पर दोनों में अलग–अलग इच्छाओं को जन्म देता है। प्रत्येक की इच्छा होगी कि वह अपनी ही रुचि वाले के सम्पर्क में आये।(वही पृ0122.123) मिल मानते है कि ऐसी स्थिति में कोई न कोई समझौता करता है एक पक्ष को आधा संतोष होता है। हमेशा पत्नी को झुकना पड़ता है। उस स्थिति में पुरुष को एक नौकर, नर्स या घर की देखभाल करने वाली स्त्री के अलावा क्या प्राप्त होता है ?

इसके विपरीत, जब दोनों व्यक्तियों में से प्रत्येक कुछ न होने के बजाय कुछ है, एक साथ एक जैसी चीजों को करते हुए, तो अपनी सहानुभूति के सहयोग से धीरे–धीरे एक व्यक्ति में उन चीजों में रुचि लेने की सामर्थ्य पैदा होने लगती है, जो पहले–पहल दूसरे व्यक्ति को ही रुचिकर लगती थीं। मिल आगे कहते है धीरे–धीरे एक दूसरे में सुधार लाने की नासमझ कोशिश लेकिन इससे अधिक दोनों के स्वभावों में संवर्द्धन के जरिए उन्हें अपनी निजी रुचियों व विशेषताएं अच्छी लगने लगती है।(वहीएपृ0123) मिल के विचारों में इस बात के दर्शन होते है कि जब एक दूसरे में स्त्री–पुरुष रुचि लेने लगते है तो प्रेम, सहानुभूति पनपती है। सब्जेक्शन ऑफ वूमेन में मिल कहते है– ''यदि दो लोग बड़े ध्येय की परवाह करते है और एक दूसरे के लिए मददगार व प्रेरणा होते हैं तो वे छोटे–छोटे मुद्दे जिनमें उनकी रुचियाँ अलग–अलग हो सकती हैं, ज्यादा मायने नहीं रखती और दोनों के बीच मित्रता ठोस व स्थायी होती है जिसे और चीज नहीं बना सकती। उनके लिए एक दूसरे को सुख देना स्वयं सुख प्राप्त करने से अधिक सुखकर हो जाता है।(वही,पृ0124) मिल ने नारी विषयक विचारों में व्याप्त प्रेम और सहानुभूति के साथ समानता का विचार जुड़ा है जो इन्हें आधार प्रदान और ग्रहण करता है।

रंजना जायसवाल कहती है– ''स्त्री–विमर्श में पुरुष से विरोध है और प्रेम में पुरुष की जरुरत। ..... दरअसल स्त्री विमर्श को पुरुष या प्रेम से विरोध नहीं, विरोध है तो इस बात का कि प्रेम में जनतन्त्र नहीं है। प्रेम के जनतन्त्र में दो स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाले स्त्री–पुरुष संयुक्त हो सकते है। .....प्रेम में स्त्री–पुरुष में बराबरी का संबंध होना चाहिए। मिल के नारी चिंतन में प्रेम में जनतन्त्र स्थापित करने की बात कही गई है।(जनसत्ता,5फरवरी 2017) समानता की बात की गई है। समानता के बगैर दोनों में प्रेम उपज ही नहीं सकता। अनामिका कहती है उन पर उनकी महिला मित्र हेरियट टेलर के विचारों का गहरा असर था, पर कुल मिलाकर वे रोमांटिक थे और 'विवाह' और 'कैरियर' में से किसी एक को चुनकर बृहत्तर जीवन को स्त्री सुलभ शालीनता महमह कर देने की बात उन्होंने की।

ऐसे घरों में जहाँ नौकर नहीं होते, 'It is good that the Mistress of a Family will herself do the work of servants.....the great occupation of women should be to beautify life.....and to diffuse beauty, elegance and grace enerywhere' ऐसे विस्मयादिबोधक वाक्य उन्होंने खूब लिखे है, जिनसे मध्यम कोटि की रुमानी कविता की गंध आती है।(अनामिका, 2014 पृ030) मिल के विचारों में मध्यम कोटि की रुमानी कविता की गंध आती है तथ्यों के आलोक के यह उपयुक्त नहीं। मिल वास्तव में स्त्री–पुरुष जीवन में प्रेम और सहानुभूति चाहते है। मिल का खुद का व्यक्तित्व भी कुछ ऐसा ही था। अपने शोधपत्र में प्रोफेसर जगदीश्वर चतुर्वेदी लिखते है कि– सन् 1830 के आसपास जॉन स्टुअर्ट मिल से हेरियट टेलर की मुलाकात होती है। यही से मिल के प्रति उनमें आकर्षण पैदा होता है जो धीरे–धीरे प्रगाढ़ होता चला गया। मिल ने उनसे समानता के आधार पर व्यवहार किया जिनसे उन्हें प्रभावित किया। प्रोफेसर चतुर्वेदी आगे लिखते है कि मिल ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि मेरे नाम से छपी अधिकांश किताबों और लेखों की सहलेखिका हेरियट टेलर है। जब दो व्यक्तियों के विचार और अनुमान पूरी तरह मिलते हों साझा हो, तो इसका मौलिकता के साथ बहुत संबंध नहीं रह जाता है। किसने पेन से लिखा यह बात गौण हो जाती है।(चतुर्वेदी,28 जून 2010)

मिल के नारी संबंधी विचारों पर गौर करें जो उनके निबंध 'द सब्जेक्शन ऑफ वूमेन' में है। नारीवादी चितंन की प्रतिनिधि पुस्तकों में एक है उसमे प्रेम और सहानुभूति के तत्व मौजूद है। मिल ने परिवार, आदर्श विवाह, कानून में इस तत्व को देखा है। वह समानता के आधार पर संबंधों को महत्व देते है। दयाभाव से नहीं। मानव जीवन में प्रेम और सहानुभूति अपरिहार्य है। इसके अभाव में जीवन में एकाकीपन आता है और घुटन अलगाव प्रतिक्षण मृत्यु की ओर ले जाती है।

## संदर्भ

सक्सेना, प्रगति (2013)*स्त्रियों की पराधीनता,* नई दिल्ली : राजकमल विश्व क्लासिक,

रवि, शामिकाःमहिलाओं से जुड़े मसलों को मिले तरजीह, *राष्ट्रीय सहारा, हस्तक्षेप* 28 जून 2014

जायसवाल, रंजना : प्रेम में जनतन्त्र, *जनसत्ता,* 5 फरवरी 2017

अनामिका (2014), स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा, नई दिल्ली सामयिक प्रकाशन,

चतुर्वेदी, जगदीश्वर, 28 जून, 2010, जॉन स्टुअर्ट मिल और उनका लेखन,